प्रातःक्लास 9-4-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

****

ओमशान्ति। परमपिता शिव भगवानुवाचः मीठे2 बच्चों को पुरुषोत्तम संगम युग कदम2 पर याद रहना चाहिए। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह भी बुधि में याद रहे हम अभी पुरुषोत्तम संगम युग पर बाप से पुरुषोत्तम बन रहे हैं। और यह जो रावण का पिंजड़ा है सारा उस से बाबा छूटकाड़ा दिलाने आये हैं। जैसे कोई पक्षी को पिंजड़े से निकाला जाता है तो वह बहुत खुश हो, उड़ कर सुख पाते हैं। तुम बच्चे भी जानते हो यह रावण का पिंजड़ा है। अनेक प्रकार के दुःख ही दुःख है। अभी बाप आये हैं इन पिंजड़े से निकालने। है तो मनुष्य ही। शास्त्रों में तो लिख दिया है देवताओं और असुरों की लड़ाई लगी फिर देवताओं ने जीता। अभी लड़ाई की तो बात है नहीं। तुम अभी असुर से देवता बन रहे हो। आसुरी रावण अर्थात 5 विकारों पर तुम जीत पहनते हो न कि रावण सम्प्रदाय पर। 5 विकारों को ही रावण कहा जाता है। बाकी किसको जलाने आदि की बात नहीं है। तुम बच्चे बड़े खुश होते हो अभी हम वहां ऐसी दुनिया में जा रहे हैं जहां न गर्मी न सर्दी होती है। सदैव बसंत ऋतु ही होती है। सतयुग स्वर्गीय बसंत-ऋतु अभी आती है। वह ऋतु तो हर 12 मास बाद आती है। यह बसंत ऋतु तुम्हारे लिए आधा कल्प लिए आती है। वहां गर्मी आदि होती नहीं। गर्मी से भी मनुष्यों को दुःख होता है। मर पड़ते हैं। फिर बहुत ठंढी में भी मर पड़ते हैं। इन सभी दुःखों की बातों से छूटने लिए तुमको अविनाशी सर्जन बहुत ही सहज दवाई देते हैं। उस सर्जन के पास जावेंगे तो अनेक दवाईयों आदि याद आवेंगा। यहां इस सर्जन के पास तो कोई दवाई नहीं। उनको सिर्फ याद करने से सभी रोग छूट जाते हैं। और दवाई आदि कुछ भी है नहीं। बच्चे कहते थे आज सेमीनार करेंगे चार्ट कैसे लिखना चाहिए, बाबा को कैसे याद करना चाहिए इस पर सेमीनार करेंगे। अभी बाप तो तकलीफ नहीं देते हैं कि बैठ कर लिखो। कागज़ खराब करो। जरूरत ही नहीं रहती। बाप तो सिर्फ कहते हैं बुधि में सिर्फ याद रखो। अज्ञान काल में बाप को याद करने लिए चार्ट बनाया जाता है क्या। इसमें लिखा-पढ़ी करने की कोई बात ही नहीं। बाप को कहते हैं बाबा हम आप को भूल जाते हैं। कोई सुने तो क्या करेंगे। कहते भी हैं हम जीते जी बाप के बने हैं। क्यों बने हो? बाप से विश्व की बादशाही का वर्सा लेने। फिर ऐसे बाप को तुम भूलते क्यों हो। ऐसे बाप जिस से इतना भारी वर्सा मिलता है उनको तुम याद नहीं कर सकते हो। इतना वार तुम ने वर्सा लिया है फिर भी भूल जाते हो। बाप से वर्सा भी लेना है तो याद भी करना है। देवीगुण भी धारण करनी है। लिखना क्या है। यह तो हरेक अपने ही दिल से पूछे। नारद का भी अभी का ही मिशाल है। खुद कहते हैं बड़ा भक्त है। बाप कहते हैं किस किसम का बड़ा भक्त है। तुम भी जानते हो हम जन्म-जन्मान्तर के भक्त हैं। हम मीठे बाप को याद कर कितना खुश होते हैं। जो जितना याद करते हैं वही ल0ना0 को वरने लायक बनते हैं। कोई गरीब का बच्चा जाकर शाहुकार की गोद लेता है तो कितना खुश होता है। बाप को और प्राप्टी को ही याद करना है। यहां तो बहुत हैं जिनको बेहद के बाप का बच्चा बन राजाई लेने का भी अकल नहीं है। अकल आता ही नहीं। वन्डरफुल बात है। जो बाप स्वर्ग का मालिक बनाते हैं उनको याद नहीं कर सकते हैं। बाप बच्चों को एडाप्ट करते हैं। एडाप्टेड बाप को याद न करना यह तो वन्डरफुल बात है। घड़ी2 बाप और प्राप्टी याद आनी चाहिए। बाप कहते हैं मीठे2 सिकीलधे बच्चों तुम ने बुलाया ही है एडाप्ट करने लिए। बाप को बुलाया जाता है ना। बाप ही स्वर्ग की स्थापना करते हैं। स्वर्ग का वर्सा देते हैं। तुम पुकारते हो बाबा आकर हम पतितों को गोद में लो। आपे ही कहते हो हम पतित कंगाल हैं, छी-छी, डर्टी, वर्थ नाट अपेनी हैं। बेहद के बाप को तुम भक्ति मार्ग में पुकारते हो। अभी बाप कहते हैं भक्ति मार्ग में भी तुमको इतना दुःख नहीं था। अभी तो कितना दुःख है। बाप आया है तो जरूर विनाश का भी समय होगा ना। तुम जानते हो इस लड़ाई, विनाश के बाद फिर कितने जन्म कितने वर्ष लड़ाई का नाम नहीं रहेगा। कभी भी लड़ाई लगेगी नहीं। न कोई दुःख आदि का नाम ही होगा। अभी तो कितनी देर

बिमारियां हैं। बापकहते हैं मीठे बच्चों हम तुम को सभी दुःखों से छूड़ा देंगे। तुम याद ही करते है हेभगवान आकर दुःख हरो सुख शान्ति दो। यह दो। चीज़ ही हरेक मांगते हैं। यहां हैं शान्ति। शान्ति की जो राय देते हैं उन्हों को प्राईज़ मिलती है। बिचारों को मालूम नहीं शान्ति किसको कहा जाता है। शान्ति तो सिवाय मीठे बाप केऔर कोईद्वारा मिल न सके। कितनी मेहनत तुम करते हो। समझाने की। फिर भी समझते नहीं हैं। तुम गर्वमेन्ट को भी लिखसकते हो मुफ्त क्यों पैसे ~~बरब~~ बरबाद करते हो। शान्ति का सागर तो एक ही बाप है। वही विश्व में शान्ति स्थापन करते हैं। गर्वमेन्ट को हेड्स को अच्छे2 कागज पर चिट्टी लिखनी चाहिए। कोई अच्छा कागज देख कर भी समझते हैं कि शायद यहकिसी बड़े आदमी की चिट्ठी है। बोलो विश्व में शान्ति जो तुम कहते हो। आगे कब हुई थी? जोफिर उस प्रकार मिले। जरूर कब मिली होंगी। तु?को मालूम है शान्ति मिली थी।? ~~श~~ या शान्ति स्थापन हुई थी। कब और किस द्वारा? तुम बच्चों को मालूम है। तुम तिथ तारीख सब लिख सकते हो। बाप ने ही आकर विश्व में शान्ति स्थापन किया था। वह सतयुग का समय था। यह ल ना० है डिनायस्टी के निशानी। ब्रहमा और तुम ब्राहमणों के पार्ट का किसको भी पता नहीं हैं। मुख्य पार्ट तो ब्रहमा का है ना। वही रथ बनते हैं। जिस रथ द्वारा बाप इतना कार्य करते हैं। नाम ही है पदमा पदम भाग्यशाली रथ। बिचार करो कैसे किसको समझावें। मनुष्यों को कितना नशा है। हू बहू जैसे बन्दरों मिशल है। बन्द को बहुत अपना नशा होता है। हाथी को देखोंगे तो भी गूरर गूरर करेंगे। अभी तो तुमको बाप का ही परिचय देना है। बाप को रचना का ज्ञान है। दुनिया तो बिलकुल कुछ नहीं जानती। भक्ति मार्ग का नाचना गाना आद ही सिर्फ जानते हैं। बाकी है कुछ है नहीं। ज्ञान तो है ही सिर्फ ज्ञान सागर पास। वह जब आवे तब आकर देवें। तब तक ज्ञान तो कोई दे न सके। भक्त सभी भक्ति ही करते हैं। ज्ञान तो एक ही बाप देते हैं। बाकी सभी हैं भक्ति मार्ग की सामग्री। इन में ज्ञान नहीं है। यह कोई ज्ञान की पुस्तक नहीं। गीता ज्ञान का पुस्तक नहीं हैं। ज्ञान का पुस्तक स्थाई कोई बनता नहीं। ज्ञान तो कानों से ही सुनना होता है। यह किताब आ जो तुम रखते हो यह सभी टेम्परी है। यह भी सभी खत्म हो जावेंगे। तुम नोट लिखते हो यह भी खत्म हो जानी है। यहसिर्फ अपने पुरूषार्थ के लिए बाप ~~कहते~~ कहते हैंटापिक्स की लिस्ट बनाओ। तो याद आवेंगा परन्तु यह तो जानते हो यह पुस्तक आद कुछ भी नहीं रहेंगी। तुम्हारी बुधि सिर्फ याद ही चल पड़ेगी। पुस्तक आद कुछ न रहेंगी। आत्मा बिलकुल बाप जैसे भरपूर हो जाती है। बाकी जो भी पुरानी चीज इन आंखों से देखते वह सभी चला जावेंगा। पिछाड़ी में कुछ भी रहने की दरकार ही नहीं। मनुष्य शास्त्रों को कितना सिखते हैं। चित्रों के कितनी प्रदक्षिणा दिलाते हैं। वास्तव में ऊंच ते ऊंच है शिव बाबा। परिक्रमा तो इनको ही दिला चाहिए। वह लोग शास्त्र आद उठाते हैं। जिन से तुमपतित बने हो। इनको बैठ परिक्रमा दिलाते हैं। क्या2 व रहते हैं। बाप है अविनाशी सर्जन। आत्मा भी अविनाशी है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। दिन प्रति दिन तो भी शरीर मिलता है छी2 भ्रष्टाचार से। अभी तुम बच्चे जानते हो श्रेष्ठाचारी बन रहे हो। बाप ही बनाते हैं। साधू सन्त आद थोड़े ही बनाते हैं। बाप तुमको श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। अपने नयनों पर बिठा कर ले जावेंगे। आत्मा भी यहां नयनों पर बैठी हैं ना। बाप कहते हैं हे आत्मा! तुम सभी को ले जाऊंगा। बाकी थोड़ा समय है अभी मेहनत करो। अपने दिल से पूछो मैं स्वीट बाबा को कितना समय याद करता हूं। हीरा रांझू का बहुत पढ़ा है। इन्हों का विकार के लिए लव नहीं था। शरीर के का प्यार था। याद करते और सामने खड़ा हो जाता था। दोनो आपस में मिल जाते थे। बाप कहते हैं तुम भी ऐसे बनो। वह है एक जन्म के आशुक माशुक। तुम हो जन्म जन्मान्तर के। यह बातें भी इस समय होती है। आशुक माशुक अक्षर भी स्वर्ग में नहीं है वह भी पवित्र रहते हैं। मनसा में खराबी नहीं आती। सामने देखा और खुश हुये। तुम बच्चों को देखने व तो कोई चीज ही नहीं। इस समय तुम सिर्फ अपन को आत्मा समझो और माशुक को याद करो। आत्मा

समझ बाप को बहुत खुशी से याद करना है। बाप समझाते रहते हैं भक्ति मार्ग में तुम ऐसे आशुक थे। ऐसे माशुक पर कुर्बान जाते थे। आप आवेंगतो हम हैं माशुक आप ×× पर वारी जावेंगे। अभी माशुक आया हुआ है। सभी को गोरा बनाते हैं। माशुक देखो कैसे बनाते हैं। जो जैसा है वैसा बनाने की कोशिश करते हैं। तुम गोरा बनते हो। तो शरीर भी गोरा बनेगा। आत्मा में ही खाद पड़ती है। मुझे याद करो तो खाद निकल जावेगी। यहां तुम बच्चे आते हो। यहां तो एकान्त बहुत अच्छी है। पादरी लोग भी आते हैं पैदल करने एकदम सायलेन्स में रहते हैं। माला हाथ मे रहती है। कोई को देखते भी नहीं हैं। धीरे2 चले जाते हैं। वह लोग कोईस्ट को याद करते होंगे। बाप को जानते ही नहीं। स्थूल को ही याद करते हैं। मेरे लिए तो कह देते नाम रूप ही नहीं। नाम रूप से नयारा है। अभी बिन्दी देखो क्या है। बिन्दी को कैसे याद करें। किसको पता भी है तुमको अभी मालूम पड़ा है तो तुम यहां आते हो। मधुवन का तो गायन है यह है सच्चा2 मधुवन। तो जितना हो सके एकान्त में ही याद में रहो। किसको देखो भी नहीं। ऊपर तो कोठे तो बने हैं। बाबा की याद में सबेरे कोठे पर चले जाओ। बड़ा मजा आवेगा। कोशिश करो रात को एक बजे दो बजे जागने की। तुम नींद को जीतने वाले मशहुर हो। सबेरे सो जाओ फिर एक दो बजे उठ कर कोठे पर एकान्त में याद की यात्रा करते रहो। बहुत अन्दर जमा करना है। बाप को याद करने, बाप की महिमा करने लग जाओ। आपस में भी बहुत राय करते रहो। बाप कितना मीठा है उनको याद करनेसे ही पाप कटेंगे। यहां बहुत जमा कर सकते हैं। यह वान्स भी यहां ही अच्छा मिलता है। घर में तो तुम कर न सकेंगे। फर्सत ही कहां रहती है। दुनिया की वायबरेशन वातावरण बहुत खराब रहता है। वहां इतने शाद की यात्रा नहीं होगी। यहां बहुत अच्छा चांस है। अभी इसमें लिखने की भी क्या बात है आशुक माशुक लिखते हैं क्या। अन्दर में देखो हमने किस को दुःख तो नहीं दिया। कितने को याद दिलाया। यहां हम आते ही हैं जमा करने। तो यहां तो कोशिश करो। बाबा ने कोठे आद तो इसलिए ही बनाये हैं। बच्चे ऊपर मे एकान्त में जाकर बैठे खजाना जमा करो। यह समय है जमा करने का। सात रोज पांच रोज आते हो मुरली सुनने। जाकर एकान्त में बैठो। यहां तो घर में बैठे हो बाबा को कहो तो बाबा दो बजे भी आ जावेंगे। यह तो ओबिडियन्ट सर्वेन्ट है। आकर ×× के तुम को याद की यात्रा करावेंगे। बच्चे ऐसे बाप को याद करो। तुम्हारा कुछ जमा तो हो जाये। बहुत मातायें बान्धेली है बहुत याद करती है। शिव बाबा बन्धनों से छूड़ाओ। बान्धेलियां और ही तुम से जास्ती याद में रहती है। घड़ी2 आंखों से आसूं बहते रहते हैं। बाबा इन बन्धनों से छूड़ाओ। विकार के लिए कितना मारते हैं। ड्रेस दिखाया है नाद्रौपदी के चीड़ हरे। तुम सभी द्रौपदियां हो। तो बाप को हीयाद करते रहना है। बाबा युक्तियां तो बहुत बतलाते रहते हैं। बाबा तो कभी भी आ जावेंगा। बाबा रथ को उठा कर तैयार कर देंगे। इसमें स्नान की भी बात नहीं रहती। मनुष्य तो स्नानकरनेसमय भी किसी देवता या भगवान कोयाद करते रहते हैं। पेखाना में भी याद कर सकते हैं। मुख्य बात है ही याद की। ज्ञान तो बहुत मिला हुआ है। 84 के चक्र का ज्ञान है। अपने अन्दर में बैठ देखो। अपने से पूछो ऐसा मीठा बाप जो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं उनको सारे दिन में कितना याद किया। मन भागता तो नहीं। कहां भागेगा। दुनिया तो है नहीं। यह भी सब खत्म हो जाना है। हम और बाप ही रहने वाले हैं। ऐसे2 अन्दर में बातें करो। तो फिर बहुत मजा आवेगा। यहां जो आते हैं वह हैं बहुत पुराने भक्त। जो नहीं आते हैं वह समझो आज कल के भक्त हैं। वह देरी से आवेंगे शुरू से भक्ति करने वाले जरूर आवेंगे। बाप से वर्सा पाने। हिसाब किताब है ना। जिसको चटक लग जाती है समझो यह शिव बाबा का पुराना भक्त है। यह बुप्त मेहनत है। जो धारणा नहीं करते हैं उन से कुछ भी मेहनत पहूंचती नहीं। यहां तुम आते ही हो रिफ्रेश होने। तो बाप समझाते हैं ऐसे 2 करो। घूमने भूल जाओ। सर्विस एबुल सर्विस एबूल के साथ ही जावेंगे। अन्तरमुख हो चक्र लगाओ। अपनी अवस्था को देखते रहो। जैसे वह

लोग क्राईस्ट को याद करते हैं। तुम भी पादरी हो। पवित्र हो ना। सफेद पोष भी हो। तो अपने से मेहनत करो। तुमको सभी मालूम पड़ेगा हम कालेपन से कितना बौरे बन रहे हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बने हैं। बाहर में तो सारा दिन धुंधे आद में ही फंसे रहते हैं। यहां तो तुमको बहुत अच्छा मौका है। एक हफ्ते में तुम इतना माल इकट्ठाक ~~रे~~ कर सकते हो जो वहां 6 मास 12 मास में भी इकट्ठा नहीं कर सकेंगे। यहां सात रोज में वही सारी कसर निकाल सकते हैं। बाबा राय देते हैं जरूर खुद करता होगा। बाबा इन द्वारा राय देते हैं। पहले तो इनकी ~~कान~~ कानसुनती है। रात को टांग टांग पर चढ़ा कर खटियों पर ~~सो~~ सोये हुये भी याद कर सकते हो। ऐसे नहीं बैठ कर याद करना है। टेव पड़ जावेगी। तो बहुत खुशी होगी। बाबा हमको विषय सागर से निकाल क्षीर सागर में ले जाते हैं। विकारों से तो जुसे बास आती है। छूने की भी दिल नहीं होती। भूत पीते हैं ना। तुम्हारा इस पर गीत भी है साधू सन्त महात्मा यह अक्षर बेमाना ... मेहतर उन से ~~ब्रे~~ बेहतर जो खाते मेहनत का खाना। वह तो युफ्त का खाते हैं। फायदे बदलो नुकसान ही होता है। हम गिरते ही जाते। वह ~~ब्र~~ सभी झूठी बातें ही सुनाते हैं। कितनी ग्लानी लगी पड़ी है। रामायण भगवद आद सभी में ग्लानी। वह है कनरस। यह तो आत्मा को खजाना मिलता है। आत्मा बड़ी खुश होती है। आत्मा जानती है बाबा को याद करने से हम यहां से उड़ जावेंगे। ऐसे2 अपने से बातें-लाते करो। आठ घंटा गवर्मेन्ट के सर्विस में दो। धंधे वाले तो फ्री है। जो चाहे सो करे। व्यापारी लो फ्री होते हैं। जब कहां जाना चाहे जावे। गवर्मेन्ट के नौकर तो बन्धन में रहते हैं। बाबा कहते हैं व्यापारियों का पकड़ो। वह व्यापार जाने। मैं भी तुम से व्यापार करने ~~आते हैं जा~~ आता हूं ना। मैं करनीधोर भी हूं। तुम्हारा पुराना लेकर क्या देता हूं। यह रिवाज भी यहां से ही निकला है। देते हैं दूसरे जन्म में लेने लिए। वह है इनडायरेक्ट यह है डायरेक्ट। मैं अभी डायरेक्ट आया हूं। तुम बाबा के पास किसलिए आये हो? विश्व के मालिकबनने लिए। जानते हो यह सभी खत्म हो जाने वाले हैं। ब्र बाबा लिखते ही हैं पदमभाग्यशाली। कब लिखते हैं पदमा पदम भाग्यशाली। नम्बरवार तो है ना। बाबा जानते हैं जो बच्चे बहुत अच्छी मेहनत करते हैं: बहुतों का कल्याण करते हैं उन्हों को पांईज भ्रष्टी भी ऐसी मिलती है। सारा विश्व का राज-भाग उन्हों को ही मिलता है। तो ऐसे बाप को दिल में याद रखना चाहिए ना। इसमें भाकी आद की भी कोई बात नहीं। यह तो पुराना पतित शरीर है ना। भाकी को याद नहीं कहा जाता है। उनको कहा जाता है बाप और बच्चे का सम्मुख मिलन। बच्चे बाप के आगे बैठे हैं। ज्ञान देने वाली भी आत्मा है। लेने वाली भी आत्मा ही है। आत्मा ही सभी कुछ करती है। बैरीस्टरी भी आत्मा ही करती है। कर्म आत्मा करती है ~~शरीर~~ शरीर द्वारा। बाप बच्चों को दहीअभिमानी बनाते हैं। तुम जानते हो इस समय तुमको नाम रूप से न्यारा होना है। सतयुग में यह शिक्षा मिलती नहीं। यह शिक्षा जरूर संगम पर ही मिलती है। फिर आधा कल्प तुम प्रारब्ध भोग ते हो। भक्ति और ज्ञान है ना। ज्ञान से आधा कल्प तुमको सुख मिलता है। अभी बाप भक्ति से छुड़ाते हैं। आधा कल्प भक्ति होती ही नहीं। सतयुग में है सुख। कलियुग में दुःख है। वह फुल सुख फिर सेमी।। यहां फिर पहले सेमी ~~सुख~~ दुःख फिर फुल दुःख होता है। सेमी दुःख है जब अव्यभिचारी भक्ति है। फिर व्यभिचारी बनती है। तो फुल ~~ब्रे~~ दुःख होता है। यहां तो सिर्फ बाप को याद करना है। रात दिन का फर्क है। तुम्हारे लिए आधा कल्प दिन बन जाता है। ब्राह्मणों का दिन गाया जाता है। फिर आधा कल्प है रात। ब्राह्मणों का दिन और ब्राह्मणों की रात। अभी तुम हो संगम पर। भगवानुवाच है न कि कृष्ण भ0 यह कृष्ण तो बुधू है। कृष्ण ही बड़ा होकर फिर ना0 बनते हैं। यह (ना0) भी भूटू है। इनको ~~स्वयं~~ रचयिता और रचना का ज्ञान नहीं है। (पवित्र बुधू है) तुम तो ईश्वर के बच्चे हो। यह नहीं है। तुमको सारा ज्ञान है। स्वर्ग के जो मालिक है उनको सुन नहीं है। वह भूल जाते है। कितनी मीठी बातें है। तुम पदमापदमभाग्यशाली हो। बाप डिपलोमेट तो है ही। सर्विसएबुल ही याद पड़ेंगे। अच्छा मीठे2 सिकील थे बच्चों को गुडमार्निंग नमस्ते।

* *-: स्वयं की बादशाही याद है?: :-*